ISBN 978-93-92703-99-7

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

डॉ. एस. प्रीति, डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादन

डॉ. एस. प्रीति • डॉ. एस. रजिया बेगम
डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

रजिया

सृजनलोक प्रकाशन
नई दिल्ली

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना पुस्तक या इसके किसी अंश को संक्षिप्त या परिवर्धित कर प्रकाशित करना, फिल्म बनाना कानूनन अपराध है।

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISBN : 978-93-92703

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024
प्रकाशक :
सृजनलोक प्रकाशन
बी–1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली - 110062
मोबाइल : 7654926060
ईमेल : srijanlok@gmail.com
आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस
मुद्रक : बी.क्यू.एस. सर्विसेज, खानपुर नई दिल्ली - 62

Hindi Sahitya Me VIvidh Vimarsh
Edited By : Dr. Razia Begum
Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

₹ **350**

अनुक्रम

डॉ. नरेश कुमार	प्रकृति चिन्तन के कवि केदारनाथ सिंह
गीतु एम	'पिता' कहानी में वृद्ध विमर्श का मार्मिक उद्वेग
डॉ. ए रमणी	हिन्दी साहित्य में महानगरीय जीवन
डू. मो. मजीद मियाँ	हदी साहित्य में स्त्री विमर्श का महत्व
डॉ. राज कुमार	कवि गणेश गनी की कविताओं में अभिव्यक्त पांगी जनजातीय समाज का बदलता परिदृश्य
प्रिनसी पी ए.	नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'हरी बिंदी' कहानी
एस. जानकी	श्यामलाल राही कृत 'टेसू के फूल' उपन्यास में दलित विमर्श
नम्रता कुमारी	उषाकिरण खान की कहानियों में पर्यावरण
महेश्वर	डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में 'दलित विमर्श'
डॉ. अनिता सिंह	हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय विमर्श - एक दृष्टि
जोरम आपी	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श का स्वरूप
प्रीति गुप्ता	आधुनिक हिंदी कविता में वृद्ध विमर्श
प्रो. रेखा मेनन	हाशिये पर बच्चे
रबोम बेलो	'स्त्री की पहचान और अस्तित्व का प्रश्न 'भया कबीर उदास' और 'सूरजमुखी अँधेरे के' उपन्यास के सन्दर्भ में
सची नायक	नर्मदेश्वर की कहानियों में आदिवासी
डॉ. सपना पेलापकर	हिंदी साहित्य में वृध्द विमर्श
इ. जैकलीन	हिन्दी साहित्य में पारिवारिक विमर्श : मालती जोशी की संदर्भ में
दीपाली सुतार	'ओमप्रकाश वाल्मीकि' की कहानियों में दलित अस्मिता की लड़ाई
डॉ. शबनम आलम	नार्सिसिस्टक (आत्ममुग्ध) मानसिकता का यथार्थपरक विश्लेषण : एक पत्नी के नोट्स
पुरी गोदावरी	'गोबर गणेश' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन का यथार्थ
साईमीरा जोशी	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श
केसरबेन राजपुरोहित	सामाजिक सोच आज भी स्त्री की विवशता...
डॉ. कला. ए.	हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श

रेखा कुमारी (शोधार्थी)	तेजेंदर शर्मा की कहानियो में प्रवासी साहित्य के विविध आयाम
डॉ. एस. प्रीतिलता	ममता कालिया की उपन्यास 'दौड' में महानगरीय जीवन
राखी	नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री स्वाधीनता का स्वरूप
रेणुका देवी	मध्यकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री
डॉ. वी. जयलक्ष्मी	हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
वि अमुधा	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में चित्रित भारतीय संस्कृति
वेंकट शिल्पा काकि डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	हिन्दी बाल कहानी साहित्य में बाल विमर्श
एस. राजलक्ष्मी	वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन
सविता राय	वापसी कहानी में वृद्ध विमर्श
नम्रता कुमारी	उषाकिरण खान की कहानियों में पर्यावरण
डॉ. सावित्री देवी,	''अपने-अपने पिंजरे'' भाग-२ आत्मकथा में दलित विमर्श
डॉ.लैजा पी जे	आदिवासी स्त्री की संघर्ष भरी दास्तान का दस्तावेज़ वाल्टर भेंगरा तरूण का उपन्यास 'लौटते हुए'
कु. उल्का कालेकर	किन्नर विमर्श
डॉ. एस. विजया	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श
राखी	नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री स्वाधीनता का स्वरूप
देवा बासफोर	लता अग्रवाल की कहानियों में किन्नर समाज की अभिव्यक्ति
कंचना कुमारी	हिन्दी साहित्य में बाल विमर्श

हिन्दी बाल कहानी साहित्य में बाल विमर्श

वेंकट शिल्पा काकि | **डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन**
शोधार्थी | शोधनिर्देशिका
संपर्क: 7299023006 | संपर्क :9884026296
26, Pearl Citadel, 5th main roadए Vels University, Pallavaram
Jayachandra nagar, Medavakkam, Chennai - 600100

हिन्दी साहित्य आज कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकाँकी, यात्रा वृत्तान्त, जीवनी आदि विभिन्न विधाओं से सुसंपन्न है। इन विभिन्न विधावों में जैसे– समाज, नारी, वृद्ध, किन्नर, दलित आदि विषयों पर लेखक अपने अनुभव, अपने विचार, अपने सुझाव जोड़ते हुए रचनाएँ किए है। साहित्य हमारी संस्कृति, रीति–रिवाज़ के बारे में बताता है और मानव जीवन के संघर्ष, चेतना, परिवर्तन, विकास के बारे में प्रकाश डालता है।

आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य में बालसाहित्य की रचना ज्यादा देखने को मिल रहे हैं। हमें यह जानना आवश्यक है कि बालसाहित्य बच्चों की जिज्ञासा रूपी भूख मिटाने में सफल है या नहीं? बच्चों में उत्तम गुण जागृत करने में उपयोगी है या नहीं? बच्चों की सर्वागीणं विकास में उपयोगी है या नहीं? इन प्रश्नों के उत्तर बालसाहित्य के विमर्श से हमें पता चलता है।

डॉ. श्रीप्रसाद जी बालसाहित्य के बारे में परिभाषित करते हुए कहा कि–"वह समस्त साहित्य, जिसमें बाल साहित्य के तत्व हैं, अथवा जिसे बालकों ने पसंद किया है, भले जिसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई हो, बालसाहित्य है।"

प्रख्यात बालसाहित्यकार जयप्रकाश भारती के अनुसार– "बालक की समस्याओं पर लिखना या किसी कला में बालक–बालिका को पात्र बना लेने से बाल–साहित्य नहीं लिखा जाता। बालक की मानसिकता को ध्यान में रखकर उसके पढ़ने के लिए, उसके मनोरंजन एवं विकास के लिए जो लिखा जाता है, वही बाल–साहित्य होता है।"

पाश्चात्य साहित्यकार हेनरी स्टील के अनुसार "बच्चों ने जिसे अपना लिया वही बाल साहित्य है। रूसी साहित्य में पौराणिक कथाओं का कोई महत्व नहीं हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों को मनोरंजन प्रदान करते हुए उनके सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक मूल गुण, ज्ञान, विचार, जीवन शैली बच्चों में लाने की कोशिश करनेवाला साहित्य बालसाहित्य कहलाता है।

बाल विमर्श वह है, जो बच्चों के लिए लिखित साहित्य के चिंतन, दशा और संभावनाओं पर आधारित है। दीविक रमेश जी की मानना है "ऐसा नहीं कि बच्चों को लेकर आज चिंता और चिंतन उपलब्ध नहीं है। बच्चे के स्वतंत्र व्यक्तित्व, उसके बहुमुखी विकास को लेकर गहरा विचार, विशेष रूप से पिछले सदी से ,होता आ रहा है।"

जिस प्रकार मिट्टी को सेंक कर मनचाही सुंदर मूर्ति बनाई जाती है उसी प्रकार बचपन से बच्चों को अच्छे संपर्क, परवरिश के द्वारा उनके भविष्य सुंदर बनाया जा सकता है। इस प्रकार बच्चों के विकास क्रम में बालसाहित्य मुख्य भूमिका निभाती है। बालसाहित्यकार को बाल मन, बाल रुचि, बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रख कर लिखना अति आवश्यक है। बच्चों को स्वस्थ परिवार और समाज में रखना जरूरी हैं । जिससे बच्चों के मन और बुद्धि में स्वच्छ तथा सकारात्मक विकास होता है।

आधुनिक युग के साहित्यकार जैसे जय प्रकाश भारती, अमृतलाल नागर, हरिकृष्ण देवसरे, परशुराम शुक्ल, दीविक रमेश, सुरेन्द्र विक्रम, प्रकाश मनु, उषा यादव, शकुंतला कालरा, वृंदा सिंह, डॉ. श्री प्रसाद, आदि साहित्यकार बालसाहित्यिक चिंतन और लेखन में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

प्रस्तुत आलेख में आधुनिक युग के बाल साहित्यकार हरीश कुमार 'अमित' जी के कहानी संग्रह 'ईमानदारी का स्वाद' और उषा यादव के कहानी संग्रह 'झोले में चाँद' में बाल विमर्श पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। हरीश कुमार 'अमित' के कहानी संग्रह 'ईमानदारी का स्वाद' में लेखक अपनी कहानियों में आत्माविश्वास का महत्व, सत्यानिष्टा, ईमानदारी, साहस, सच्ची मित्रता, बुरी संगति का असर, अंधविश्वास आदि गुणों के बारे में बखूबी प्रस्तुत किए हैं।

'ईमानदारी का स्वाद' कहानी संग्रह की कहानी 'समझ आ गई' के पात्र मोहित, पाठशाला में सहपाठी निखिल की बातों में आकार अंधविश्वासों का पालन करता है। जिस कारण उन्हें परीक्षा के लिए पहुँचने में देर हो जाता है और परीक्षा ठीक तरह से नहीं दे पाता है। अंत में पिताजी के समझाने पर वह अंधविश्वास के चलते, अपने आप पर विश्वास न करते हुए अपनी की गलती को सुधारने की कोशिश करता है।

उषा यादव जी की कहानी संग्रह 'झोले में चाँद' बच्चों की मानसिक स्थितियों को समझ कर उनकी समस्याओं को दूर करने की सराहनीय प्रयास की है। इनकी कहानियों में मनोरंजन के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास के लिए अवशयक आत्मा विश्वास, कठिन परिश्रम, धर्म का पालन, त्याग, ममता, सच्चाई, ईमानदारी आदि नैतिक, जीवन मूल्य को जगाने का बखूबी प्रयास किया गया है।

'झोले में चाँद' कहानी संग्रह में 'सपने सच हुए' कहानी का मुख्य पात्र श्यामू चपरासी हीरालाल का बेटा, अपने पिता का नकल करता है और पिता की तरह चपरासी बनने की सपना देखता है। एक बार अदालत की मुकदमा श्यामू के मन में जज बनने की इच्छा जगाती है। घर से निकाल देने के कारण श्यामू बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करके, अंत में जज बन जाता है। जज बनकर घर वापस आए बेटे की निष्टा, लगन से पिता हीरालाल बहुत खुश होते है।

आज मानव अपने बुद्धि के कारण चाँद तक पहुँच गया है। फिर भी हमारे आगे ऐसे लोग दिखते है जो अंधविश्वास को आज भी मानकर चलते हैं। जैसे – काला बिल्ली रास्ते में आया तो कार्य नहीं होगा सोच कर घर लौट जाते है। आज भी ऐसे कई सारे अंधविश्वास धर्म के नाम पर, पालन किए जा रहे हैं। बच्चे बड़ों को देख या दोस्तों के कहने पर अंधविश्वासों को सच मान कर चलने लगते हैं।

'समझ आ गई' कहानी में मोहित भी अपने मित्र निखिल की बातें मनकर अंधविश्वास का पालन करता है। वह अपने पिताजी के लाए हुए हरा पेन देख कर कहता है–"पापा, आप जानते नहीं कि हरे रंग से हार होती है? हमेशा नीला रंग ही जिताता है।..., हरे रंग के पेन से कल परीक्षा दूंगा तो अच्छे नंबर नहीं आएंगे। पिछली बार नीले रंग के पेन से लिखने पर बढ़िया नंबर आए थे न!" मोहित पढ़ाई छोड़ कर अंधविश्वास के चक्कर में पुराना पेन डूँडने में समय लगा देता है। पेन तो मिल जाता है पर परीक्षा की तैयारी नहीं कर पाता है। सुबह माँ पाँच बजे मोहित को उठाते वक्त छींकती है तो, मोहित बिस्तर से नहीं उठता। पिताजी पूछने पर मोहित कहता है– "पापा निखिल ने कल स्कूल में बताया था कि कोई काम शुरू करने से पहले अगर किसी को छींक आ जाए तो इससे काम बिगड़ जाता है, इसलिए किसी को छींक आ जाने पर एकदम अपना काम शुरू नहीं कर देना चाहिए। दस मिनट रुककर ही काम शुरू करना चाहिए।" जब स्कूल बस निकल जाता है पिताजी मोहित को आटोरिक्शा पे छोड़ने निकलते हैं तब आटोरिक्शा का नंबर देख कर उस गाड़ी में जाने के लिए मना करते हुए कहता है– "पापा, इस स्कूटर का नंबर तो 1013 है। 13 का अंक तो अशुभ होता है। इस स्कूटर में जाने पर परीक्षा अच्छी नहीं होगी। किसी दूसरे स्कूटर में चलेंगे।" इस प्रकार हर काम में कुछ न कुछ अंधविश्वास के कारण रुकावट आ जाता है। अंधविश्वास हमें आगे बढ़ने में रुकावट पैदा करता हैं। इस के कारण अपने आप पर विश्वास खो देते हैं। लेखक प्रस्तुत कहानी में इस विषय का मर्मस्पर्शीय चित्रण प्रस्तुत किए है। इस कहानी के माध्यम से लेखक अंधविश्वास से उत्पन्न समस्याओं के बारे में चेतावनी दिए है। अच्छे मित्र को चुनने में सजग रहने की सीख दिए हैं।

वेदों में जिन विषयों के बारे में बताया गया है उन्में छिपी सच्चाई को वेज्ञानिक शोध के आधार पर सही साबित कर रहे है । अतः हमारे रीति–रिवाज को सही ढंग से समझे और अंधविश्वास से दूर रहे। साहित्य द्वारा बच्चों में अंधविश्वास दूर करने का अच्छा प्रयास हो रहा है। अंधविश्वास के प्रति जागरूकता लाने सराहनीय प्रयास साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

पाश्चात्य जीवन शैली का प्रभाव भारतीय जीवन पर पड़ रहा है। इसके चलते–चलते बच्चे अपने संस्कार और जीवन मूल्य से ज्यादा दिखावे की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। बच्चों मेहनत करने की जगह पलायन व्याहवार को अपना रहे हैं। काम में आए अवरोधों को सुलझाते हुए जीवन में आगे बड़ने की ओर बच्चों को जागरूक करना आवश्यक है। जैसे दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति कलाम जी कहते है–'ऐसे सपना देखो जो तुम्हें सोने नहीं देते है और सदा अपने लक्ष्य की ओर जाने में प्रेरित करते हैं।' बच्चे सही और उत्तम लक्ष्य निर्धाराणं के महत्व के बारे में सीखना चाहिए। उसे पाने के लिए बच्चों में सकारात्मक सोच को जगाना आवश्यक है।

'झोले में चाँद' कहानी संग्रह में 'सपने सच हुए' कहानी बच्चों को सपने देख ने और उन्हे पाने की प्रेरणा देनेवाली कहानी है। श्यामू अपने पिता को देख कर भाई के साथ रोज चपरासी–चपरासी खेलते बड़े हो कर चपरासी बनना चाहता है। परंतु एक बार अदालत में चली मुकदमे ने श्यामू के सोच में परिवर्तन लता है। श्यामू घर जा कर अपने भाई से पूछता है "भैया, भैया, तुम बड़े होकर क्या बनोगे? श्यामू – 'चपरासी। और तुम?' रामू ने जवाब देने के साथ ही सवाल किया।'मैं तो जज साहब बनूँगा,'श्यामू रोज के विपरीत आज नया जवाब दिया" अतः बच्चे अपने आँखों से देखे , कानों से सुने विषयों पर बहुत ध्यान देते हैं। जो उन्हे पसंद आए उसे आजमाने और बनने को ठान लेते हैं। श्यामू भी जज बनने का संकल्प कर लेता है। मासूम श्यामू के सपना से पिता हीरालाल असन्तुष्ट होते हुए उन्हे अपने आर्थिक स्थिति की वजह से चपरासी बनने की विवशता के बारे बताता है। किन्तु मन में निश्चय लिए श्यामू अपनी बात से नहीं हटता है।गुस्से में पिताजी श्यामू को घर से निकाल देते हैं। किन्तु श्यामू अपना सपना पुरा करने का संकल्प से रास्ता डूँडने लगता है। एक वकील के घर में काम करता है। उनकी सह्यता से खूब मेहनत और लगन से पढ़ाई और काम दोनों करता है। आखिर अपना सपना पूरा करता है। जज बनने के बाद गर्व के साथ सिर उठा कर अपने परिवार से मिलने हिरालाल के घर पहुंचता है। श्यामू को पहचान नहीं पाते हैं हिरालाल और रामू। श्यामू अपना परिचय देता है। रामू और पिताजी श्यामू की सफलता को चमत्कार मानते है।

तभी श्यामू बताता है–"चमत्कार कुछ नहीं। तुमने चपरासी बनना चाहा, तुम चपरासी बने। मैंने जज बनना चाहा, मैं जज बन गया। मेरा–तुम्हारा सपना अलग–अलग था न । दोनों के सपने सच हो गए हैं।"

अतः लेखिका प्रस्तुत कहानी के माध्यम से सकारात्मक सोच, अच्छे सपने के महत्व, मेहनत का महत्व, सत्य निष्ठा आदि केबारे में सरल और सुंदर ढंग से अपना विचार प्रस्तुत किए हैं। इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि आत्माविश्वास, मेहनत और लगन हमें अपने सपने साकार करने में द्योतक है। जिस प्रकार श्यामू अपना सपना सच किया है, उसी प्रकार हम अपने सपनों को साकार करने में चाहे जोभी कठिनाई आए उसका सामना करते हुए आगे बढ़ना है।

निष्कर्षतः हम यह देखते हैं कि बाल विमर्श वर्तमान समय की मांग है। विमर्श चिंतन पर जोर देता है जिससे आज समाज के विभिन्न परिस्थितियाँ जैसे– बालक–बालिका में अंतर, चेहरे की रंग रूप न तुलना किए असली सुंदरता की पहचान, बालमानोविज्ञान से जुड़ी कई बातें, विज्ञान के कई विषयों को समझ कर उन्हे अपनाना, पर्यावरण को समझना, सही ज्ञान पहचनना, आदि कई विषयों पर सृजनात्मक और उपयोगी बालसाहित्य उभर कर सामने आता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः

1. उषा यादव, झोले में चाँद,बैनीयन ट्री पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2017.
2. हरीश कुमार 'अमित', ईमानदारी का स्वाद, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2022.
3. दीविक रमेश, हिन्दी बाल–साहित्य कुछ पड़ाव, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 2015.
4. डॉ. सरोजिनी पाण्डेय, बाल–साहित्यः समीक्षा के प्रतिमान और इतिहास लेखन, आशीष प्रकाशन,कानपुर, 2011.
5. बृहत शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश,श्री प्रकाशन, नई दिल्ली.

वेब–ग्रंथ सूचि :

1. https://www.scotbuzz.org/2021/02/vimarsh.html home/discussion, bandey, February 16.2021
2. https://rmpv06.blogspot.com/2019/09@blog&post-html, Rincy Manu, September 23, 2019